अध्याय 3

मन्दिर की नींव रखना

जब यहूदियों ने यहूदा की ओर यात्रा करने के लिए बेबीलोन छोड़ा, तब उनका प्राथमिक उद्देश्य मन्दिर का पुनः निर्माण करना और व्यवस्था में बताए गए तरीकों के अनुसार आराधना को फिर से संयोजित करना था। उस लक्ष्य को पूरी तरह से पूरा करने में एक देरी रही होगी; परन्तु जैसा अध्याय 3 बताता है उसके अनुसार कम से कम लोगों ने प्रभु को बलिदान चढ़ाने और मन्दिर की नींव रखने के द्वारा उस परियोजना का आरम्भ सफलतापूर्वक कर दिया।

वेदी और पुनः स्थापित की गई बलियाँ (3:1-7)

[1]जब सातवाँ महीना आया, और इस्राएली अपने अपने नगर में बस गए, तो लोग यरूशलेम में एक मन होकर इकट्ठा हुए। [2]तब योसादाक के पुत्र येशू ने अपने भाई याजकों समेत और शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल ने अपने भाइयों समेत कमर बाँधकर इस्राएल के परमेश्वर की वेदी को बनाया कि उस पर होमबलि चढ़ाएँ, जैसा कि परमेश्वर के भक्त मूसा की व्यवस्था में लिखा है। [3]तब उन्होंने वेदी को उसके स्थान पर खड़ा किया क्योंकि उन्हें उस ओर के देशों के लोगों का भय रहा, और वे उस पर यहोवा के लिये होमबलि अर्थात् प्रतिदिन सबेरे और साँझ के होमबलि चढ़ाने लगे। [4]उन्होंने झोपड़ियों के पर्व को माना, जैसा कि लिखा है, और प्रतिदिन के होमबलि एक एक दिन की गिनती और नियम के अनुसार चढ़ाए। [5]उसके बाद नित्य होमबलि और नये नये चाँद और यहोवा के पवित्र किए हुए सब नियत पर्वों के बलि और अपनी अपनी इच्छा से यहोवा के लिये सब स्वेच्छाबलि हर एक के लिये बलि चढ़ाए। [6]सातवें महीने के पहले दिन से वे यहोवा को होमबलि चढ़ाने लगे। परन्तु यहोवा के मन्दिर की नींव तब तक न डाली गई थी। [7]तब उन्होंने पत्थर गढ़नेवालों और कारीगरों को रुपया, और सीदोनी और सोरी लोगों को खाने-पीने की वस्तुएँ और तेल दिया, कि वे फारस के राजा कुस्रू के पत्र के अनुसार देवदारु की लकड़ी लबानोन से याफा के पास के समुद्र में पहुँचाएँ।

दिया गया रिकॉर्ड यह वर्णन करते हुए आरम्भ होता है कि किस प्रकार यरूशलेम पहुँचने वाले लोगों ने परमेश्वर के सम्मुख होमबलियाँ चढ़ाईं और व्यवस्था के द्वारा नियुक्त पर्व मनाएँ।

आयत 1. यहूदी लोग जरुब्बाबेल के साथ यहूदा की भूमि की ओर लौटे। वे यरूशलेम में और अन्य विभिन्न कस्बों में और अपने अपने **नगर** में बस गए (2:70)।

यहाँ पर उनकी पहचान **इस्राएली** अथवा इस्राएलियों के रूप में की गई। यह देखे बिना कि लोग किस गोत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, "इस्राएल" शब्द को "परमेश्वर के लोग" के रूप में देखा जाना चाहिए। कीथ एन. स्कोविल्ले ने इसका वर्णन इस प्रकार किया: "अधिकांश लोग बिन्यामीन और यहूदा गोत्र से थे परन्तु इस समझ के अनुसार कि वे द्वितीय निर्गमन में भाग ले रहे थे यह पुनःस्थापन आत्मा में पूरे इस्राएल का हो रहा था।"[1]

यहूदी कलेन्डर के अनुसार जब **सातवाँ महीना** आया (तिशरी का महीना, जिसे हम सितम्बर अथवा अक्टूबर के रूप में जानते हैं) तब **लोग यरूशलेम में इकट्ठा हुए**। उनके पहुँचने के बाद यह लगभग तीन महीनों के बाद हुआ होगा।[2] ऊपरी तौर पर वे उस कार्यस्थल पर एक साथ आए, जहाँ पर सुलैमान का मन्दिर खड़ा था। पद **एक मन होकर** उनके उद्देश्य की एकता को रेखांकित करता है। बलिदान चढ़ाने के लिए और "झोपड़ियों का पर्व" मनाने के लिए उन लोगों ने वहाँ पर भेंट की (3:4; देखें लैव्य. 23:34-36)। यह पर्व तम्बुओं का पर्व अथवा सुक्कोत भी कहलाता है। सातवें महीने में अन्य महत्वपूर्ण उत्सवों में तुरहियों का पर्व (लैव्य. 23:24, 25; जो यहूदी नव वर्ष का रोश हश्शनाह भी कहलाता है) और पश्चात्ताप का दिन (लैव्य. 23:27-32; जो योम किप्पूर के रूप में भी जाना जाता है) शामिल थे।

आयत 2. बलिदान (विशेषकर **होमबलि**) चढ़ाने के लिए इस्राएली जाति को एक **वेदी** की आवश्यकता थी जो उस स्थान में हो जो बेबीलोन निवासियों के द्वारा मन्दिर नष्ट करने के समय गिरा दी गई थी (देखें 2 राजा. 25:8, 9; 2 इतिहास 36:19)। **येशू** महायाजक था, जबकि इस पाठ्य में उसकी पहचान इस प्रकार नहीं की गई है (देखें 2:2 पर टिप्पणियाँ देखें)। उसने और अन्य **याजकों** ने सांसारिक शासक जरुब्बाबेल के साथ और जो लोग उसकी सहायता कर रहे थे उनके साथ मिलकर काम किया। उन लोगों ने मिलकर वेदी का पुनः निर्माण ठीक उसी स्थान पर किया जहाँ पर यह पहले थी ("उसके स्थान पर"; 3:3)।

ऐसा लगता है कि पाठ्य संकेत देता है कि यहूदियों ने उस महीने के प्रथम दिन वेदी का निर्माण किया और उस महीने के प्रथम दिन से ही बलिदान अर्पित करना आरम्भ कर दिया (3:6)। ये दोनों कथन सही कैसे हो सकते हैं? एक सम्भावना यह है कि आयत 2 के इब्रानी पाठ्य का अनुवाद इस प्रकार किया जाना चाहिए, "अब येशू ... और **जरुब्बाबेल** ... ने कमर बाँधी और वेदी को बनाया ... ।" अन्य शब्दों में, वे लोग सातवें महीने के प्रथम दिन से कुछ समय पहले से इस परियोजना पर कार्य करना आरम्भ कर चुके थे जब तक कि लोग मिलकर यरूशलेम पहुँचे। अन्य विचार यह है कि उन्होंने मिट्टी की बनी हुई अथवा बिना कटे हुए पत्थर की एक अस्थायी वेदी का निर्माण तीव्रता से किया जैसा निर्गमन 20:24, 25 में बताया गया।[3]

लोगों का अर्थपूर्ण रूप से लक्ष्य यह था कि वे बलिदान **चढ़ाएँ** जैसा कि **परमेश्वर के भक्त मूसा की व्यवस्था में लिखा** [था]। पुराने नियम के कुछ आलोचकों ने इस बात को बनाए रखा कि, पंचग्रन्थ की स्पष्ट शिक्षा के अन्तर में, मूसा की

व्यवस्था, निर्वासन पश्चात के समय में इसके गठन की प्रक्रिया के अन्तर्गत ही थी। फिर भी यह पद व्यवस्था को इस प्रकार प्रस्तुत करता है मानो यह मूसा की ओर से आयी हो, लिखी गई हो (जिसमें पूरी तरह से मौखिक परम्पराएँ न हों) और मानो यह छठवीं शताब्दी ईस्वी पूर्व में यहूदियों पर लागू होती हों। यहूदी लोग इस समय तक (लगभग 537 ई.पू.) परमेश्वर के लिखित वचन के द्वारा संचालित थे!

आयतें 3-5. वेदी का निर्माण करने के बाद, "अपने चारों ओर के लोगों का डर होने के बाद भी" (NIV) यहूदी उस पर **होमबलि चढ़ाने लगे**। **उस ओर के देशों के लोग** वे थे जो उस देश में रहते थे (और अभी भी वहाँ रह रहे थे) जिसे यहूदियों ने अब अपने स्वामित्व में ले लिया था। वे उन लोगों के वंशज थे जिन्हें अश्शूरियों ने लगभग दो सौ वर्ष पूर्व उस देश में बसाया था। उत्तरी राज्य के लोगों के निर्वासन के बाद नए स्थान में बसने वाले इन लोगों ने देश में बचे हुए इस्राएलियों से अन्तर्विवाह कर लिया (2 राजा. 17:24-41)। इसके परिणामस्वरूप जो "लोग" हुए वे परमेश्वर के लोगों के प्रति शत्रु बन गए और वैसा ही भाव रखते रहे। एज्रा 4:1 में वे "यहूदा और बिन्यामीन के शत्रु" कहलाते हैं।

यहूदियों के बलिदान किस प्रकार बताते हैं कि उनमें अपने शत्रुओं **का भय** था? शायद पाठ्य उनके साहस के बारे बताता है: उनमें भय होने के बाद भी उन्होंने बलिदान चढ़ाए। उनके डर की व्याख्या का एक अन्य तरीका यह है कि इसे उनके द्वारा बलिदान करने के एक कारण के रूप में देखा जाए: उनके डर के कारण उन्होंने अपने शत्रुओं से बचने के लिए परमेश्वर की सुरक्षा की खोज करते हुए बलिदान चढ़ाए। वहाँ जो वेदी थी वह परमेश्वर तक पहुँच प्राप्त करने का एक माध्यम थी क्योंकि उसने वायदा किया था कि वह "इस्राएलियों से वहीं मिला करेगा" (निर्गमन 29:43)।[4]

ये आयतें बताती हैं कि यहूदियों ने क्या चढ़ाया: (1) **प्रतिदिन सबेरे और साँझ के होमबलि** (3:3), जो प्रतिदिन की होमबलि के लिए व्यवस्था की माँग को सन्तुष्ट करती थी (निर्गमन 29:38-42; गिनती 28:3-8); (2) **झोपड़ियों के पर्व** के लिए बलियाँ (3:4), अथवा "तम्बूओं का पर्व" (KJV), जिसमें आठ दिनों तक **एक एक दिन की गिनती के अनुसार** बलिदान चढ़ाए जाने थे (गिनती 29:12-38); (3) **नये नये चाँद** और **सब नियत पर्वों** के लिए आवश्यक बलियाँ (3:5) अर्थात प्रतिमाह के बलिदान (गिनती 28:11- 15) और अन्य वार्षिक पर्व (लैव्यव्यवस्था 23:1-37; 2 इतिहास 8:13); और (4) **परमेश्वर के लोगों के द्वारा स्वेच्छाबलि**[यों] के रूप में लायी गई होमबलियाँ (3:5; गिनती 29:39; व्यव. 16:10)।

आयत 6. सातवें महीने के पहले दिन से ये सब बलियाँ अर्पित की जाने लगी। अन्य शब्दों में, यह पद मात्र यह नहीं बताता कि जब वेदी खड़ी कर दी गई और जब प्रथम बलिदान चढ़ाए गए तब उस अवसर पर क्या क्या हुआ; इसके स्थान पर यह वर्णन करता है कि उस दिन से क्या होना आरम्भ हुआ और होता चला गया। वेदी पर बलियों को नियमित रूप से चढ़ाया जाना फिर से आरम्भ हो गया।

हालांकि यहूदियों के पास अब एक वेदी थी और वे बताए गए बलिदान अर्पित कर रहे थे फिर भी कुछ ऐसा था जो छूट रहा था: वहाँ पर कोई मन्दिर नहीं था। **यहोवा के मन्दिर की नींव तब तक न डाली गई थी।** यह पद आगे बताता चला जाता है कि लोगों ने किस प्रकार उस कमी को सही करना आरम्भ किया।

आयत 7. उस निर्माण की तैयारी में यहूदियों ने मज़दूरों को किराए पर लिया और उन्होंने निर्माण सामग्री की व्यवस्था की। उन्होंने **पत्थर गढ़नेवालों और कारीगरों** को मज़दूरी दी जो पुनः निर्माण का वास्तविक काम करने वाले थे; और उन्होंने **देवदारु की लकड़ी लबानोन से** लाने के बदले में सीदोनी और सोरी लोगों को **खाने-पीने की वस्तुएँ और तेल** दिया जिनकी आवश्यकता निर्माण के लिए थी।

मन्दिर के पुनः निर्माण के विभिन्न बिन्दु, सुलैमान के मन्दिर के निर्माण की याद करवाने वाले थे। (1) निर्माण आरम्भ करने से पूर्व सामग्री एकत्रित की गई (2:68, 69; 1 इतिहास 22)। (2) सोर और सीदोन ने मन्दिर के लिए लकड़ी उपलब्ध करवाई (3:7; 1 राजा. 5; 2 इतिहास 2)। (3) नींव पर कार्य उसी महीने में आरम्भ हुआ जिस महीने में सुलैमान ने प्रथम मन्दिर पर काम आरम्भ किया था (3:8; 1 राजा. 6:1; 2 इतिहास 3:1, 2)। (4) नींव रखे जाने पर लोगों का आनन्द उसी प्रकार का था जैसा आनन्द प्रथम मन्दिर का काम पूरा कर लेने पर और वाचा का सन्दूक यरूशलेम में लाने के समय था (3:10, 11; 1 राजा. 8; 2 इतिहास 5)। (5) मन्दिर के कार्य की समाप्ति को बलिदान चढ़ाने के द्वारा मनाया गया (6:14-18; 1 राजा. 8:62-66; 2 इतिहास 7:1-11)।

यह पाठ्य इस बात पर बल देता है कि जो कुछ यहूदी कर रहे थे वह **फारस के राजा कुस्रू** के अधिकार के अन्तर्गत था। निःसन्देह, यह ध्यान का केन्द्र था क्योंकि यहूदियों ने विरोध का सामना किया था जिसके बारे में लेखक निरन्तर वर्णन करता चला जाता है।

मन्दिर के पुनः निर्माण का आरम्भ और रखी गई नींव (3:8-13)

[8]उनके परमेश्वर के भवन में, जो यरूशलेम में है, आने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने में, शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल ने और योसादाक के पुत्र येशू ने और उनके अन्य भाइयों ने जो याजक और लेवीय थे, और जितने बँधुआई से यरूशलेम में आए थे उन्होंने भी काम को आरम्भ किया, और बीस वर्ष अथवा उससे अधिक अवस्था के लेवियों को यहोवा के भवन का काम चलाने के लिये नियुक्त किया। [9]तब येशू और उसके बेटे और भाई, और कदमीएल और उसके बेटे, जो यहूदा की सन्तान थे, और हेनादाद की सन्तान और उनके बेटे परमेश्वर के भवन में कारीगरों का काम चलाने को खड़े हुए। [10]जब राजमिस्त्रियों ने यहोवा के मन्दिर की नींव डाली तब अपने वस्त्र पहने हुए, और तुरहियाँ लिये हुए याजक, और झाँझ लिये हुए आसाप के वंश के लेवीय इसलिये नियुक्त किए गए कि इस्राएलियों के राजा दाऊद की चलाई हुई रीति के अनुसार यहोवा की स्तुति करें। [11]अत: वे यह गा गाकर यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे। "वह भला है, और उसकी करुणा इस्राएल पर

सदैव बनी है।" जब वे यहोवा की स्तुति करने लगे तब सब लोगों ने यह जानकर कि यहोवा के भवन की नींव अब पड़ रही है, ऊँचे शब्द से जय जयकार किया। 12परन्तु बहुतेरे याजक और लेवीय और पूर्वजों के घरानों के मुख्य पुरुष, अर्थात् वे बूढ़े जिन्होंने पहला भवन देखा था, जब इस भवन की नींव उनकी आँखों के सामने पड़ी तब वे फूट फूटकर रोने लगे, और बहुतेरे आनन्द के मारे ऊँचे शब्द से जय जयकार कर रहे थे। 13इसलिये लोग, आनन्द के जय जयकार का शब्द, लोगों के रोने के शब्द से अलग पहचान न सके, क्योंकि लोग ऊँचे शब्द से जय जयकार कर रहे थे, और वह शब्द दूर तक सुनाई देता था।

आयत 8. वास्तविक पुनः निर्माण **दूसरे वर्ष** के **दूसरे महीने में** आरम्भ हुआ। "दूसरा महीना" जीव (इय्यर) था जो अप्रैल अथवा मई के अनुसार है। अगर यहूदी वायदे के देश में 537 ई.पू. की बसन्त की ऋतु में पहुँचे तो "दूसरा महीना," 536 की बसन्त की ऋतु का समय रहा होगा।[5] जब "सातवाँ महीना" (3:1-3) था उसी समय वेदी का समर्पण हो चुका था तो मन्दिर का काम आरम्भ करने में लगभग आधा वर्ष क्यों लगा? उपयुक्त रूप से, सामग्री एकत्रित करने के समय के कारण देरी हुई। आखिरकार, मन्दिर के लिए लकड़ी लबानोन से याफा के मार्ग से होकर आनी थी (3:7)।

जब उन्होंने निर्माण करना आरम्भ किया उस समय, **जरुब्बाबेल** (एक सांसारिक शासक) और **येशू** (महायाजक) अगुवे थे। मन्दिर की नींव रखे जाने के लिए जरुब्बाबेल के स्थान पर 5:16 में शेशबस्सर को श्रेय दिया। इस स्पष्ट भिन्नता के लिए सम्भावित विवरणों में, जेकब एम. मेयर्स ने सुझाया कि शेशबस्सर (जो एक वृद्ध था) उसने मुख्य अगुवे के रूप में कार्य किया जबकि जरुब्बाबेल (जो एक मध्यम आयु का व्यक्ति था) यहूदा के मामलों में एक सक्रिय अधिकारी था।[6]

जरुब्बाबेल और येशू के अतिरिक्त, **उनके अन्य भाइयों ने जो याजक** थे और वे जो **लेवीय थे** उनके साथ और अन्य लोग जो बेबीलोन से आए थे उनके साथ मिलकर मन्दिर के **काम को आरम्भ किया**। **बीस वर्ष** अथवा उससे **अधिक अवस्था** के **लेवियों** को **यहोवा के भवन** [का] **काम चलाने के लिये** नियुक्त किया गया। जिस आयु में लेवियों ने अपना कार्य आरम्भ किया वह इस्राएल के इतिहास में उनके काम के स्वरूप और उपलब्ध लेवियों की संख्या के आधार पर विभिन्न समय में भिन्न रही। जंगल में पवित्र पात्रों के परिवहन के लिए आयु "तीस" (गिनती 4:3) वर्ष रही, निवासस्थान की सामान्य सेवा की आयु "पच्चीस" (गिनती 8:24) वर्ष रही और बाद के समय में यह आयु "बीस" (3:8; 1 इतिहास 23:24; 2 इतिहास 31:17) वर्ष रही।[7]

आयत 9. जिन लोगों ने पुनः निर्माण की योजना का काम आरम्भ किया उन्हें उन याजकों से सहायता मिली जो **येशू**, **कदमीएल**, **यहूदा** और **हेनादाद** के परिवारों से थे। ऊपरी तौर पर, यह जानना कठिन है कि इन नामों को किस प्रकार समझा जाए और इन्हें अन्य सूचियों से किस प्रकार जोड़ा जाए। NIV में इस प्रकार दिया हुआ है "येशू और उसके बेटे और भाई, और कदमीएल और उसके बेटे

(होदग्याह के वंशज) और हेनादाद की सन्तान और उनके बेटे और भाई।" NRSV इस प्रकार अनुवाद करती है, "अपने बेटों और सम्बन्धी के साथ येशू और कदमीएल और उसके बेटे, हेनादाद के बेटों के साथ बिन्नई और होदग्याह।" पाठ्य को "यहूदा" (जो इब्रानी में सामान्य रूप से देखने को मिलता है) के स्थान पर "होदग्याह" पढ़ा जाना चाहिए, इसका समर्थन नहेम्याह 7:43 के द्वारा किया गया है। निकट सम्बन्धों को न देखते हुए पाठ्य इस बात पर बल देता है कि ये अगुवे काम में एक साथ **खड़े हुए**।

आयतें 10, 11. मन्दिर की नींव का काम पूरा होने पर एक अत्यधिक बहाव के साथ परमेश्वर की स्तुति करते हुए उत्सव मनाया गया। स्तुति करने में **याजक** अगुआई दे रहे थे जो **तुरहियाँ** लिये हुए, याजकीय **वस्त्र** पहने हुए थे और **झाँझ** लिये हुए **लेवीय** थे। विशेष रूप में, मन्दिर के इन गायकों की पहचान इस प्रकार की गई कि वे **आसाप** के वंश से थे। उन्होंने **इस्राएलियों के राजा दाऊद की चलाई हुई रीति के अनुसार यहोवा की स्तुति**[की]। दाऊद ने मूल रूप से "प्रधान लेवियों को आज्ञा दी कि वे अपने भाई गवैयों को बाजे अर्थात् सारंगी, वीणा [और] झाँझ देकर बजाने और आनन्द के साथ ऊँचे स्वर से गाने के लिये नियुक्त करें" (1 इतिहास 15:16; देखें 2 इतिहास 29:25, 26)।

वे लोग प्राप्त की गई आशिषों के लिए **गा गाकर यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे**। NRSV और NKJV में "वे गा गाकर" का अनुवाद इस प्रकार किया गया है, "वे प्रत्युत्तर के तरीके से गा रहे थे। यह ऐसा सुझाता है कि लोग एक गायन मण्डली का दूसरी गायन मण्डली के द्वारा उत्तर दिए जाने के साथ अथवा एक अकेले याजक के गाने पर उत्तर में गायकों के गाने के साथ अथवा किसी अन्य व्यवस्था के साथ गा रहे थे जिसमें उत्तर दिए जाने के साथ गाया जाता है।"[8] **सब लोगों ने ऊँचे शब्द से** स्तुति और आनन्द के साथ धन्यवाद करने में स्वयं को शामिल कर लिया। इसी समान शब्दों का प्रयोग करते हुए उन्होंने कहा, **"वह भला है, और उसकी करुणा इस्राएल पर सदैव बनी है"** (देखें भजन 136)।

आयतें 12, 13. बहुतेरे याजक और लेवीय और पूर्वजों के घरानों के मुख्य पुरुष, अर्थात् वे बूढ़े जिन्होंने पहला भवन देखा था वे **उस समय** फूट **फूटकर रोने लगे** जब **उन्होंने** इस नए मन्दिर की नींव देखी। सुलैमान का मन्दिर सोने और भव्यता के साथ प्राचीन जगत के आश्चर्यों में से एक रहा होगा। हाग्गै और जकर्याह ने बाद में लोगों की निराशा से व्यवहार किया जो उनके द्वारा निर्माण किए जा रहे मन्दिर के नकारात्मक मूल्यांकन के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई (हाग्गै 2:1-9; जकर्याह 4:9, 10)।

ठीक उसी समय जब कुछ लोग फूट फूटकर रो रहे थे तब बहुतेरे **आनन्द के मारे ऊँचे शब्द से जय जयकार कर रहे थे** जिसके परिणामस्वरूप उनको देखने वाले एक व्यक्ति को **आनन्द के जय जयकार का शब्द, लोगों के रोने के शब्द से अलग पहचान** में नहीं आ रहा होगा। फिर भी, वहाँ की मनोदशा सर्वाधिक रूप से आनन्द और हर्ष से भरी हुई होगी-अर्थात वह हर्ष जिसका **शब्द दूर तक सुनाई देता था**!

इस प्रकार तर्क वितर्क किया गया कि यह पद लगभग 536 ई.पू. में नींव रखे जाने के बारे में बताने के स्थान पर यह वर्णन करता है कि लगभग 520 ई.पू., दारा के दिनों में क्या हुआ था। फिर भी, इस तथ्य को देखते हुए कि अनेक **बूढ़े** लोगों ने पहले मन्दिर को याद किया जो 586 ई.पू. में नष्ट कर दिया गया, बलवन्त रूप से पहले की दिनांक का समर्थन करता है। 520 ई.पू. में उनकी संख्या आवश्यक ही कम रही होगी (देखें हाग्गै 2:3)।[9]

अनुप्रयोग

सफ़लतापूर्वक नींव का रखा जाना (अध्याय 3)

एक अच्छी नींव के बिना किसी भी ठोस वस्तु का निर्माण नहीं किया जा सकता। हमारी एक बेटी और उनके पति ने एक नया घर खरीदा और उसमें आए हुए उन्हें अधिक समय नहीं हुआ था कि उन्होंने पाया कि उस घर की दीवारों में दरारें पड़ रही हैं। ख़िड़कियों के पास गड्ढे नज़र आने लगे और एक दरवाज़ा अटक गया और खुला ही नहीं। जब उन्होंने जाँच करने के लिए एक इंजीनियर को बुलाया तो उसने पाया कि उस घर की नींव में कमियाँ हैं। हालांकि वह घर सुंदर था परन्तु प्रायोगिक रूप से मूल्यहीन था क्योंकि उसकी नींव ठीक प्रकार से नहीं रखी गई थी।

इसके अन्तर में एज्रा 3 एक ऐसी नींव का वर्णन करता है जो सही प्रकार से रखी गई। गुलामी से लौटने के बाद यहूदियों का प्राथमिक लक्ष्य यह था कि परमेश्वर के मन्दिर का अर्थात उसके घर का पुनः निर्माण किया जा सके। यह अध्याय बताता है कि उस परियोजना में पहला चरण किस प्रकार पूरा किया गया - किस प्रकार मन्दिर के पुनः निर्माण की नींव सफलतापूर्वक रखी गई। उस नींव के रखे जाने के विषय में हमें यह विचार करने की आवश्यकता है कि यह कैसे हुआ और तब हमें यह विचार करने की आवश्यकता है कि ऐसा क्यों हुआ और इससे हम क्या सीख सकते हैं कि वर्तमान में कलीसिया भवन का निर्माण करने में हम किस प्रकार सहायता कर सकते हैं।

क्या हुआ था: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि। लगभग 538 ई.पू. में यहूदी बेबीलोन से फिलिस्तीन की ओर लौटे और यरूशलेम में और प्रदेश के विभिन्न अन्य कस्बों में बस गए। एज्रा 3 के अनुसार, लगभग उनके काम का पहला क्रम वेदी का पुनः निर्माण करना और उस पर बलिदान व्यवस्था को पुनः स्थापित करना था। (गुलामी में सत्तर वर्षों के समय में मूसा की व्यवस्था की माँग के अनुसार शायद वे बलिदान अर्पित नहीं कर पाए होंगे।) इस कारण सातवें महीने (सितम्बर अथवा अक्टूबर) के प्रथम दिन वे यरूशलेम में एकत्रित हो गए और व्यवस्था के द्वारा ठहराए गए बलिदान पूरे क्रम के साथ अर्पित करने लगे (3:1-6)।

फिर भी, जहाँ पर मन्दिर खड़ा था उस कार्य स्थल पर बलिदान चढ़ा पाना पर्याप्त नहीं था। उन्हें एक मन्दिर की आवश्यकता थी! वास्तव में, वे मन्दिर अर्थात, "परमेश्वर के भवन" (3:8) का पुनः निर्माण करने के उद्देश्य के लिए प्राथमिक रूप

से लौट कर आए थे। कार्य का अगला क्रम यह था कि पुनः निर्माण का काम आरम्भ किया जाए। इसके लिए मज़दूरी पर मज़दूर बुलाए गए और उन्हीं लोगों से निर्माण सामग्री ख़रीदी गई जिन्होंने सुलैमान को उसके मन्दिर के लिए सामग्री के साथ कुछ और उपलब्ध करवाया - अर्थात सोर और सीदोन के लोग।

कार्य आरम्भ हुआ और मन्दिर की नींव डालने के कुछ समय बाद ही उत्सव मनाने का एक अच्छा समय स्थापित किया गया। याजकों और लेवियों की अगुआई में लोगों ने धन्यवाद के भजन गाए और ऊँचे शब्द से जय जयकार की (3:10, 11)। आश्चर्यजनक रूप से कुछ बूढ़े लोग जिन्हें पूर्व का मन्दिर याद था वे उस समय फूट फूटकर रोने लगे जब उन्होंने नींव का काम होने के बाद इसे देखा (3:12) - शायद इसलिए कि वे देख पा रहे थे कि नई इमारत इस प्रकार नहीं थी कि सुलैमान के महिमामय भवन के साथ इसकी तुलना की जा सके। परिणामस्वरूप उनके रोने के शब्द आनन्द के जय जयकार के शब्द के साथ इस प्रकार मिल गए कि कोई भी देखने वाला व्यक्ति आसानी से इन दोनों में अन्तर नहीं कर सकता था (3:13)। फिर भी, वह क्षण प्रबल रूप से बड़े आनन्द का समय था! मन्दिर की नींव डाली जा चुकी थी! परमेश्वर का घर पुनः निर्मित किया जा सकेगा!

ऐसा क्यों हुआ: मन्दिर की नींव सफलतापूर्वक डालने के प्रति सहयोगी तथ्य। यहूदी किस प्रकार सफ़ल रहे और मन्दिर की नींव रखने का काम पूरा कर पाए? जब हम वह प्रश्न यहूदियों के बारे में और उनकी निर्माण परियोजना के बारे में करते हैं तब हम यह हमारी ओर से पूछ रहे हैं जिससे एक आलंकारिक उत्तर प्राप्त कर सके। वर्तमान में परमेश्वर का मन्दिर कलीसिया है। पौलुस ने इफिसियों को लिखा,

> इसलिये तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो। जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है (इफि. 2:19-21)।

कलीसिया के बारे में हम 1 कुरिन्थियों 3:16 में पढ़ते हैं, "क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?"

हम परमेश्वर के लोगों के लिए एक इमारत का निर्माण कर रहे हों या नहीं जिसका प्रयोग किया जा सके फिर भी हम सदैव कलीसिया का निर्माण करने की प्रक्रिया में हैं (देखें इफि. 4:12)। ऐसा करने के लिए हमें एक अच्छी नींव रखने की आवश्यकता है जैसा यहूदियों ने किया। पाँच लक्षण जिन्होंने यहूदियों के गुणों को प्रकट किया उन्हें एक मण्डली के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

1. उनकी एकता। लोग सफलतापूर्वक नींव रख पाए क्योंकि वे एक मन हो गए थे: "लोग यरूशलेम में एक मन होकर इकट्ठा हुए" (3:1)। इस प्रकार किसी प्रकार का लाभप्रद कार्य पूरा करने के लिए आवश्यक है कि मण्डली के सदस्य एक मन हो जाएँ (देखें यूहन्ना 17:20, 21; 1 कुरि. 1:10; इफि. 4:1-3; फिलि. 2:1,

2)। कलीसिया के सफलतापूर्वक कार्य की नींव का एक भाग कलीसिया का एक मन होना है।

2. उनकी उदारता। मन्दिर के लिए सही नींव डालने की उत्सुकता में यहूदी दानशील अथवा उदार बन गए थे। उन्होंने स्वेच्छाबलियाँ चढ़ाई (3:5) और उन लोगों को धन दिया जिन्होंने मन्दिर पर शारीरिक रूप से मज़दूरी की (3:7; देखें 2:68, 69)। हम उन अन्य अवसरों को याद करते हैं जब परमेश्वर के लोगों ने उदारता से दिया - जैसे कि इस्राएलियों ने निवासस्थान के निर्माण के लिए उदारता से दिया (निर्गमन 35:21-29; 36:2-7) और जब मकिदुनिया की कलीसियाओं ने भारी कंगालपन में यरूशलेम के दरिद्र सन्तों की सहायता करने के लिए उदारता से दिया (2 कुरि. 8:1-5; देखें प्रेरितों 4:32-35)। इसी प्रकार वर्तमान में प्रभु के लिए बहुत कुछ करने के लिए, मज़बूत कलीसियाओं का निर्माण करने के लिए परमेश्वर के लोगों के लिए आवश्यक है कि वे उदारता के साथ दें।

3. उनकी सही प्राथमिकताएँ। परमेश्वर के लोग मन्दिर की नींव सफलतापूर्वक रख पाए, क्योंकि (कम से कम इस समय) उन्होंने उन बातों को पहले रखा जिन्हें पहले स्थान में रखा जाना चाहिए (3:2-6)। उनका पहला काम - अथवा अनेक कामों में से एक - परमेश्वर के घर का निर्माण करना था। यहाँ तक कि मन्दिर का निर्माण करने से पहले उन्होंने उसकी आराधना करना और बलिदान अर्पित करना आरम्भ किया। आराधना और स्तुति के द्वारा नींव डालने का काम पूरा कर लिया गया।

मण्डली किसे प्राथमिकता दे? हो सकता है कि कोई कहे कि हमें स्थानीय सुसमाचार प्रचार को प्राथमिकता देनी चाहिए। अन्य जन इस बात पर बल देंगे कि हमारा मुख्य काम विदेशी मिशन कार्य होना चाहिए जबकि कोई अन्य यह कहेंगे कि हमें (कलीसिया के निर्माण में) आत्मिक उन्नति को प्राथमिकता देनी चाहिए। शायद हम यह कहते हुए इन दृष्टिकोणों में मेल बैठा सकते हैं कि हमें परमेश्वर के काम को प्राथमिकता देनी चाहिए - और इसके लिए विभिन्न समय में विभिन्न कार्यों पर बल देने की आवश्यकता है।

ठीक ऐसा ही यहूदियों ने किया। इस समय, उनके द्वारा परमेश्वर के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह था कि मन्दिर का पुनः निर्माण किया जाए और परमेश्वर की आराधना को पुनः स्थापित किया जाए। यह वही कार्य था जिसे उन्होंने अपने हाथों में लिया।

4. उनकी विश्वासयोग्यता। यहूदी सफलतापूर्वक नींव रख पाए क्योंकि वे परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार आराधना करने और व्यवस्था का पालन करने में विश्वासयोग्य बने रहने के बारे में चिन्तित थे (3:2)। अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया होता तो अन्य जो कुछ उन्होंने किया वह व्यर्थ चला जाता। वर्तमान में उसी प्रकार अगर हम कलीसिया का निर्माण उसी प्रकार करने की इच्छा रखते हैं जैसा परमेश्वर चाहता है तो हमें आगे जैसा बताया गया है उसके अनुसार परमेश्वर के लिखित वचन को अपना निर्देशन सिद्धान्त बनाना होगा। कलीसिया "सत्य का खंभा और नींव" (1 तीमु. 3:15) हो। अगर हम सत्य का प्रचार करने में और सिखाने में और

उसकी आज्ञा का पालन करने में असफल हो जाते हैं तो अन्य जो कुछ हम करते हैं वह व्यर्थ है।

5. उनका शामिल होना। अन्ततः वे मन्दिर की नींव सफलतापूर्वक रख पाए क्योंकि सब लोग इस काम में शामिल हो गए थे। जरुब्बाबेल और येशू ने अपने भाई याजकों की सहायता के साथ काम में अगुआई दी (3:2). जरुब्बाबेल, येशू और अन्य लेवियों ने काम करने वाले लोगों का निरीक्षण करने के लिए कदमीएल और उसके बेटे, जो यहूदा (अथवा होदग्याह) की सन्तान थे, और हेनादाद की सन्तान के साथ काम किया। "आसाप के वंश" के कहलाने वाले याजकों और लेवियों ने नींव डाले जाने के समय संगीत के साथ ऊँचे शब्द से जय जयकार किया। अन्य लोगों ने "पत्थर गढ़नेवालों और कारीगरों" और "राजमिस्त्रियों" के रूप में काम किया। इनके अतिरिक्त लोग स्वेच्छाबलियाँ और होमबलियाँ चढ़ाते हुए एकत्रित हुए और प्रभु की स्तुति करते हुए मिलकर ऊँचे शब्द से जय जयकार करने लगे। इस कार्य के सफ़ल आरम्भ में सबने भाग लिया (3:7-11)।

कलीसिया के द्वारा किसी बड़े कार्य को पूरा कर पाने के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक सदस्य इसमें शामिल हो जाए। प्रत्येक सदस्य काम का निर्देशन नहीं कर सकता; प्रत्येक सदस्य अगुआ बनने के लिए नहीं बुलाया गया है। फिर भी कलीसिया को अपना मिशन पूरा करने में सहायता प्रदान करने के लिए प्रत्येक सदस्य कुछ कर सकता है। परमेश्वर विभिन्न सदस्यों को विभिन्न योग्यताएँ देता है परन्तु सब कुछ इसलिए है कि "मसीह की देह उन्नति पाए" (इफि. 4:11, 12)। प्रत्येक सदस्य को गुण दिए गए हैं और उनसे यह माँग की जाती है कि वे अन्य सदस्यों की सहायता करने के लिए और परमेश्वर की महिमा के लिए उनका प्रयोग करें (1 पतरस 4:10, 11)। सामान्य रूप में, परमेश्वर का काम करने में किसी कलीसिया की सफलता इसमें शामिल सदस्यों के प्रतिशत के अनुपात में ही होगी।

निष्कर्ष। एक मज़बूत कलीसिया का निर्माण करने में किस बात की आवश्यकता होती है? उन्हीं भागों की जैसा मन्दिर की नींव डालने में रही: एकता, उदारता, सही प्राथमिकता और इसमें शामिल होना। परमेश्वर के लोगों ने इन चरित्रों का प्रदर्शन किया इसलिए मन्दिर का पुनः स्थापन का कार्य अच्छी प्रकार आरम्भ किया जा सका।

एक अच्छा आरम्भ महत्वपूर्ण है! एक तेज़ धावक जो एक अच्छी शुरुआत करता है उसने अन्य धावकों पर एक निश्चित लाभ प्राप्त कर लिया है। ऐसा उस दल के साथ भी होता है जो किसी प्रतियोगिता में पहले स्थान पर अंक प्राप्त कर लेता है: एक अच्छा आरम्भ दल की आत्मा को बल प्रदान करता है जबकि यह विरोधी दल को निराश करने की ओर झुकाव रखता है। जब हम एक स्थानीय मण्डली का निर्माण करने के लिए कार्य करते हैं तब अगर हम एक अच्छा आरम्भ चाहते हैं तो हमें एक ऐसी मण्डली का विकास करना होगा, जिसमें लोग आत्मा में एक मन हों, देने में उदार हों, परमेश्वर के वचन के प्रति विश्वासयोग्य हों, कलीसिया की गतिविधियों में शामिल हों और प्रभु के काम को प्राथमिकता देने के लिए समर्पित हों।

एज्रा 3 में मन्दिर के पुनः स्थापना की जो कहानी आरम्भ होती है वह यहीं पर समाप्त नहीं होती। आइए हम पूर्व में ही सचेत हो जाएँ कि आवश्यक रूप से ऐसा नहीं है कि एक अच्छा आरम्भ एक सफ़ल निष्कर्ष की ओर लेकर जाएगा। हमें अच्छी प्रकार से आरम्भ करने की आवश्यकता है परन्तु हमें दृढ़ रहने की भी आवश्यकता है। "विश्वास की रखवाली" (देखें 2 तीमु. 4:7) करने के लिए और जब तक काम पूरा नहीं हो जाता तब तक ज़ोर लगाते रहने के लिए हमें संकल्प लेने की आवश्यकता है। जब हम ऐसा कह सकते हैं, "मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है," तब हम उन बातों के लिए वास्तव में आनन्द मना सकते हैं जो परमेश्वर ने हमारे द्वारा की।

समाप्ति नोट

[1]कीथ एन. स्कोविल्ले, *एज्रा-नहेम्याह*, द कॉलेज प्रेस एनआईवी कमेन्ट्री [जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं., 2001), 65. [2]एडविन एम. यमूची, "एज्रा-नहेम्याह," में *द एक्सपोजिटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम 4, *1 राजा-अय्यूब*, एड. फ्रैंक ई. गैब्लिन [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन पब्लिशिंग हाउस, 1988], 621. [3]रुबेन रेटस्ज़लेफ़ एन्ड पॉल टी. बट्लर, *एज्रा, नहेम्याह एन्ड एस्तेर*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ (जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस, 1979), 38. [4]डेरेक किड्नर, *एज्रा एन्ड नहेम्याह*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1979), 46. [5]यमौची, 624. अगर बेबीलोन से यात्रा करने पर लगभग चार महीने लगे तो उन्होंने लगभग 538 ई.पू. के अन्त तक स्थान छोड़ा होगा. [6]जेकब एम. मेयर्स, *एज्रा, नहेम्याह*, द ऐंकर बाइबल, वोल. 14 (गार्डन सिटी, न्यू योर्क: डबलडे & कं., 1965), 28. [7]आगे की जानकारी के लिए, देखें कोय डी. रोपर, *गिनती*, ट्रुथ फ़ोर टुडे कमेन्ट्री (सर्सी, अर्कांसस: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 2012), 115-16. [8]जेम्स बर्टन कॉफ्फ़मेन एन्ड थेल्मा बी. कॉफ्फ़मेन, *कमेन्ट्री ओन एज्रा, नहेम्याह एन्ड एस्तेर* (अबिलीन, टेक्सास: एसीयू प्रेस, 1993), 29. [9]मेयर्स, 26.